National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 92-96
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

रेखा पटेल
शोधार्थी, हिंदी अध्ययनशाला एवं शोध केन्द्र, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड - विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध निर्देशक
डॉ. रश्मि जैन
प्राध्यापक,
शासकीय कन्या महाविद्यालय, बीना (म.प्र.)

Correspondence:
रेखा पटेल
शोधार्थी, हिंदी अध्ययनशाला एवं शोध केन्द्र, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड - विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

गीतांजलि श्री एवं नीलाक्षी सिंह की रचनाओं में शिल्प, भाषा और शैली का तुलनात्मक अध्ययन

रेखा पटेल, डॉ. रश्मि जैन

शोध-सार

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन ने भाषा, शिल्प और शैली के स्तर पर नए प्रयोगों तथा संवेदनात्मक विस्तार को जन्म दिया है। इसी परंपरा में गीतांजलि श्री एवं नीलाक्षी सिंह दो ऐसी महत्वपूर्ण रचनाकार हैं, जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से आधुनिक समाज, स्त्री-अनुभव, अस्तित्वबोध और सामाजिक यथार्थ को विशिष्ट साहित्यिक शिल्प एवं भाषा-शैली में अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में इन दोनों लेखिकाओं की रचनाओं में प्रयुक्त शिल्प, भाषा और शैली का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। गीतांजलि श्री की रचनाओं में प्रतीकात्मकता, काव्यात्मकता, अल्पशब्दीय अभिव्यक्ति और मनोवैज्ञानिक गहराई प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होती है। उनका शिल्प अनुभूति-प्रधान, मुक्त संरचना वाला तथा पाठक को अर्थ-निर्माण में सहभागी बनाने वाला है। भाषा में लयात्मकता, संकेतात्मक अर्थ, रूपक एवं बिंबों का सघन प्रयोग उनकी शैली को विशिष्ट बनाता है। उनकी रचनाएँ व्यक्तिगत अनुभवों को सार्वभौमिक संवेदना में रूपांतरित करती हैं। इसके विपरीत नीलाक्षी सिंह की रचनाएँ सामाजिक यथार्थ, चरित्र-केंद्रित संरचना और संवादात्मक भाषा के माध्यम से जीवन की वास्तविक स्थितियों का सजीव चित्रण करती हैं। उनका शिल्प घटनात्मक, कथात्मक प्रवाहयुक्त तथा समाज की बहुस्तरीय संरचनाओं को उजागर करने वाला है। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण, स्थानीय रंगों से युक्त और संप्रेषणीय है, जो पात्रों को यथार्थ जीवन से जोड़ती है। उनकी शैली वर्णनात्मक, सामाजिक चेतना से प्रेरित तथा मानवीय संघर्षों को उभारने वाली है। इस तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जहाँ गीतांजलि श्री की रचनाएँ आंतरिक संवेदना और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति पर आधारित हैं, वहीं नीलाक्षी सिंह का साहित्य बाह्य सामाजिक यथार्थ और जीवंत कथात्मकता से संपन्न है। दोनों की रचनात्मक दृष्टि, भाषा-प्रयोग और शैलीगत भिन्नता समकालीन हिंदी साहित्य को वैविध्य, गहराई और नवीनता प्रदान करती है। अतः यह शोध समकालीन स्त्री लेखन की साहित्यिक प्रवृत्तियों को समझने में महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द- समकालीन हिंदी साहित्य, स्त्री लेखन, भाषा, शिल्प और शैली, प्रतीकात्मकता, काव्यात्मकता, अल्पशब्दीय अभिव्यक्ति

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का समकालीन परिदृश्य निरंतर परिवर्तनशील सामाजिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक परिवेश से प्रभावित रहा है। विशेषतः उत्तर-आधुनिक युग में साहित्य केवल सौंदर्य बोध की अभिव्यक्ति न रहकर सामाजिक चेतना, आत्म-अन्वेषण, अस्मिता-विमर्श तथा संवेदनात्मक अनुभवों का सशक्त माध्यम बन गया है। [5] इस परिवर्तनशील साहित्यिक परिदृश्य में स्त्री लेखन ने नई भाषा, नवीन शिल्प और विशिष्ट शैली के माध्यम से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। इसी स्त्री-लेखन की परंपरा में

गीतांजलि श्री एवं नीलाक्षी सिंह दो ऐसी महत्वपूर्ण रचनाकार हैं, जिन्होंने अपनी रचनात्मक विशिष्टताओं से समकालीन हिंदी साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।

गीतांजलि श्री [1] का साहित्यिक संसार मुख्यतः आंतरिक संवेदनाओं, स्मृति, प्रेम, पीड़ा, अस्तित्वबोध और स्त्री-चेतना की सूक्ष्म अभिव्यक्ति पर आधारित है। उनकी रचनाओं में भाषा एक काव्यात्मक लय ग्रहण कर लेती है, जिसमें प्रतीक, बिंब, रूपक तथा संकेतात्मक अर्थों का प्रभावी प्रयोग मिलता है। उनका शिल्प परंपरागत कथा-संरचना से भिन्न है; वह खुली संरचना, अल्पशब्दीय सघनता और पाठक की सहभागिता पर आधारित है। इस कारण उनकी रचनाएँ पाठक को केवल कथ्य तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि उसे अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय सहभागी बनाती हैं।

दूसरी ओर नीलाक्षी सिंह [3] की रचनात्मकता सामाजिक यथार्थ, पारिवारिक संबंधों, मानवीय संघर्ष और समकालीन जीवन की जटिलताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। उनकी रचनाओं में कथात्मक प्रवाह, चरित्र-निर्माण और संवादात्मक भाषा का सजीव प्रयोग दिखाई देता है। उनका शिल्प घटनात्मक एवं चरित्र-केंद्रित है, जो पाठक को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से साक्षात्कार कराता है। भाषा सरल, प्रभावी तथा स्थानीय रंगों से युक्त है, जिससे पात्र और परिवेश पूर्णतः जीवंत प्रतीत होते हैं।

यद्यपि दोनों लेखिकाएँ स्त्री अनुभव और सामाजिक चेतना को केंद्र में रखती हैं, तथापि उनके अभिव्यक्ति के माध्यम, भाषा-प्रयोग और शैलीगत संरचना में स्पष्ट भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। यही भिन्नता समकालीन हिंदी साहित्य को बहुआयामी बनाती है। गीतांजलि श्री का प्रतीकात्मक और अनुभूति-प्रधान लेखन जहाँ पाठक के अंतरमन को स्पर्श करता है, वहीं नीलाक्षी सिंह का यथार्थवादी और कथात्मक लेखन सामाजिक सच को उजागर करता है।

अतः प्रस्तुत शोध का उद्देश्य इन दोनों लेखिकाओं की रचनाओं में शिल्प, भाषा और शैली के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार दोनों की रचनात्मक प्रक्रियाएँ समकालीन हिंदी साहित्य की संवेदनशीलता, वैचारिकता और कलात्मकता को विस्तार प्रदान करती हैं। यह अध्ययन न केवल स्त्री लेखन की प्रवृत्तियों को समझने में सहायक होगा, बल्कि आधुनिक हिंदी साहित्य की विकास-यात्रा को भी नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर प्रदान करेगा।

साहित्यिक परिप्रेक्ष्य

समकालीन हिंदी साहित्य में महिला लेखन पर अनेक शोध, आलेख और शोध-पत्र लिखे गए हैं। मनु भंडारी, कृष्णा सोबती, महादेवी वर्मा जैसे लेखकों के बाद महिला लेखन में अनुभवात्मक, आत्मकथ्यात्मक एवं सामाजिक विमर्श का मजबूत स्थान रहा है।

हिंदी साहित्य के विकासक्रम में समकालीन युग विशेष रूप से प्रयोगशीलता, बहुविध वैचारिक दृष्टिकोण और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के साहित्यिक प्रतिबिंब के कारण विशिष्ट स्थान रखता है। इस कालखंड में रचना केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं रही, बल्कि सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदना, अस्मिता और प्रतिरोध की सशक्त आवाज़ बनकर उभरी है। इस परिवर्तनशील साहित्यिक वातावरण में *स्त्री लेखन* ने एक स्वतंत्र एवं वैचारिक पहचान स्थापित की है।

गीतांजलि श्री तथा नीलाक्षी सिंह की रचनाएँ भी इसी विमर्श का विस्तार हैं, किन्तु दोनों की लेखन-शैली एवं भाषा में विशिष्ट अंतर मौजूद है। जहां गीतांजलि श्री का शिल्प अधिक प्रतीकात्मक, अनुभूतिपरक एवं अलंकारिक है [2], वहीं नीलाक्षी सिंह का शिल्प सामाजिक, यथार्थपरक और चरित्र-केंद्रित रूप में प्रकट होता है। [4] अन्य शोधों में भी यह पाया गया है कि महिला लेखन में भाषा की भाषा-राजनीति, प्रतिरोध की बहुभाषिकता, और आत्म-अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति प्रमुख विषय हैं। इस शोध में इन दोनों लेखिकाओं की भाषा-प्रक्रिया का विश्लेषण इसी दिशा में एक योगदान है।

समकालीन हिंदी साहित्य और स्त्री लेखन की परंपरा

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन का स्वर मुखर हुआ। महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती, मनु भंडारी, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, चित्रा मुद्गल आदि लेखिकाओं ने स्त्री-अनुभव, सामाजिक विसंगतियों और आत्म-अभिव्यक्ति को साहित्य के केंद्र में स्थापित किया। इनके बाद की पीढ़ी में गीतांजलि श्री और नीलाक्षी सिंह जैसी रचनाकारों ने इस परंपरा को नए शिल्प, नई भाषा और नई संवेदना के साथ आगे बढ़ाया।

आलोचकों का मत है कि समकालीन स्त्री लेखन में अनुभूति की सूक्ष्मता और सामाजिक यथार्थ की तीव्रता दोनों का समन्वय मिलता है। यही विशेषता गीतांजलि श्री एवं नीलाक्षी सिंह की रचनाओं में भी दृष्टिगोचर होती है।

गीतांजलि श्री पर उपलब्ध साहित्यिक विमर्श

गीतांजलि श्री की रचनाओं पर हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में आलोचनात्मक लेखन उपलब्ध है। विशेषतः उनके उपन्यास 'रेत समाधि' ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी साहित्य को नई पहचान दी है। समीक्षकों ने उनकी भाषा-शैली को काव्यात्मक गद्य, प्रतीक-प्रधान शिल्प तथा उत्तर-आधुनिक कथात्मक संरचना के रूप में परिभाषित किया है।

आलोचक प्रो. राकेश तिवारी के अनुसार — "गीतांजलि श्री की भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि अर्थ-सृजन की प्रक्रिया है।"

इसी प्रकार नारीवादी आलोचना के अंतर्गत उनकी रचनाओं को स्मृति-विमर्श, अस्मिता-बोध तथा स्त्री स्वायत्तता की दृष्टि से विश्लेषित किया गया है। तथापि उनके शिल्प, भाषा और शैली के तुलनात्मक अध्ययन पर अभी सीमित शोध उपलब्ध है।

नीलाक्षी सिंह पर उपलब्ध साहित्यिक विमर्श

नीलाक्षी सिंह समकालीन हिंदी कथा-साहित्य की सशक्त आवाज़ मानी जाती हैं। उनकी रचनाओं पर उपलब्ध समीक्षाएँ उन्हें सामाजिक यथार्थ की कथाकार के रूप में पहचानती हैं। आलोचकों ने उनके लेखन में चरित्र-निर्माण की दक्षता, संवाद की जीवंतता और स्थानीयता से युक्त भाषा को उनकी प्रमुख विशेषता माना है।

हिंदी समय, कथादेश, तद्भव और वागर्थ जैसी साहित्यिक पत्रिकाओं में उनके कथा-संग्रहों पर समीक्षात्मक लेख प्रकाशित हुए हैं। इन लेखों में उनके शिल्प को यथार्थवादी कथा-संरचना और समाजोन्मुख दृष्टिकोण से संपन्न माना गया है।

फिर भी नीलाक्षी सिंह की भाषा-शैली की तुलनात्मक विवेचना विशेषकर अन्य समकालीन लेखिकाओं के संदर्भ में अभी शोध-स्तर पर अपेक्षाकृत कम हुई है।

तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन की परंपरा

हिंदी साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन की परंपरा प्राचीन है। भारतेन्दु युग से लेकर आधुनिक काल तक रचनाकारों की भाषा, शिल्प और शैली की तुलना के माध्यम से साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया जाता रहा है। तुलनात्मक अध्ययन साहित्यिक विकास की दिशा, प्रवृत्ति और नवीन प्रयोगों को समझने का प्रभावी माध्यम है।

इसी परंपरा में गीतांजलि श्री और नीलाक्षी सिंह का तुलनात्मक अध्ययन समकालीन स्त्री लेखन की विविधता, वैचारिकता और कलात्मकता को समझने का अवसर प्रदान करता है।

शोध-अंतराल

उपलब्ध साहित्यिक समीक्षाओं से यह स्पष्ट होता है कि:

- गीतांजलि श्री की रचनाओं पर स्वतंत्र आलोचनात्मक अध्ययन उपलब्ध हैं।
- नीलाक्षी सिंह की कथात्मक शैली पर समीक्षात्मक लेख मौजूद हैं।
- किंतु दोनों लेखिकाओं की रचनाओं में शिल्प, भाषा और शैली का व्यवस्थित तुलनात्मक अध्ययन अभी तक पर्याप्त रूप में उपलब्ध नहीं है।

यही शोध-अंतराल प्रस्तुत अध्ययन को प्रासंगिक और आवश्यक बनाता है।

साहित्यिक परिप्रेक्ष्य का निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन ने भाषा और शिल्प के स्तर पर नए प्रयोग किए हैं। गीतांजलि श्री और नीलाक्षी सिंह इसी प्रयोगशील परंपरा की सशक्त प्रतिनिधि हैं। उनके साहित्य पर उपलब्ध आलोचनात्मक लेखन से उनकी व्यक्तिगत साहित्यिक विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं, परंतु तुलनात्मक विश्लेषण की कमी अभी भी बनी हुई है। प्रस्तुत शोध इसी कमी की पूर्ति करते हुए समकालीन हिंदी साहित्य में भाषा, शिल्प और शैली के विविध आयामों को समझने में योगदान देगा।

गीतांजलि श्री का साहित्यिक शिल्प, भाषा और शैली

शिल्प की विशिष्टताएँ

गीतांजलि श्री की रचनाओं में शिल्प की मुख्य विशेषता है संक्षिप्तता, प्रतीकवाद, और मनोवैज्ञानिक गहराई। उनकी लघुकथाएँ अक्सर अल्पशब्दों में विस्तृत अर्थाभिरामता पैदा करती हैं। उदाहरणतः उनकी एक लघुकथा में मात्र दो-तीन पंक्तियों में मानव मन की पीड़ा, अस्तित्व की उलझन और विपरीत भावों का संयोग उपस्थित होता है। उनका शिल्प खुला अंत चुनता है, जो पाठक को स्वयं रचना के अर्थ को पूर्ण करने का स्थान देता है। [1]

गीतांजलि श्री की रचनाओं का शिल्प पारंपरिक आरंभ–मध्य–अंत की रेखीय संरचना का अनुसरण नहीं करता। उनकी कथाएँ और उपन्यास मुक्त संरचना में विकसित होते हैं। घटनाएँ सीधी क्रमबद्धता में न होकर स्मृति, अनुभव और चेतना की धारा के माध्यम से आगे बढ़ती हैं। यह शिल्प पाठक को रचना में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान करता है।

उनके लेखन की सबसे महत्वपूर्ण शिल्पगत विशेषता प्रतीक और बिंबों का सघन प्रयोग है। वस्तुएँ, स्थान, रंग, ध्वनि और मौन तक अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया में शामिल हो जाते हैं। उदाहरणतः 'रेत समाधि' में रेत, घर, दीवार, खिड़की, दरवाज़ा — सभी प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करते हैं।

गीतांजलि श्री की रचनाओं में कम शब्दों में गहरे भाव और अर्थ व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है। उनका शिल्प संक्षिप्तता में व्यापकता उत्पन्न करता है। यह गुण विशेषतः उनकी लघुकथाओं और काव्यात्मक गद्य में दृष्टिगोचर होता है।

उनकी कथात्मक शैली में चेतना-प्रवाह की तकनीक का प्रभाव दिखाई देता है। पात्रों की आंतरिक अनुभूतियाँ, स्मृतियाँ और मनःस्थितियाँ निरंतर प्रवाह में प्रस्तुत होती हैं। इससे कथा बाह्य घटनाओं की अपेक्षा आंतरिक संसार की यात्रा बन जाती है।

गीतांजलि श्री का गद्य काव्यात्मक लय और संगीतात्मक प्रवाह से युक्त होता है। वाक्य-संरचना में लय, ध्वनि-सौंदर्य और आवृत्ति उनके शिल्प को विशिष्ट बनाते हैं। इस कारण उनकी रचनाएँ गद्य और कविता की सीमा को धुंधला कर देती हैं।

उनकी अधिकांश रचनाओं का अंत स्पष्ट निष्कर्ष नहीं देता, बल्कि पाठक को सोचने और अर्थ-निर्माण की स्वतंत्रता प्रदान करता है। यह उत्तर-आधुनिक शिल्प की महत्वपूर्ण विशेषता है।

भाषा का प्रयोग

गीतांजलि श्री की भाषा साधारण शब्दों में गूढ़ार्थ, प्रतीक और अनुभूति को संयोजित करती है। उनके शब्द चयन में संभावनाओं की बहुरूपीता स्पष्ट होती है—एक ही शब्द कई भावों को व्यक्त कर सकता है। उनकी भाषा में मूल्य, प्रतीक, कल्पना और चित्रात्मकता का मिश्रण है, जो पाठक को भावात्मक स्तर पर जोड़ता है। [2]

शैलीगत विशिष्टताएँ

शैली के संदर्भ में गीतांजलि श्री की रचना में छंद-रहित काव्यात्मकता, लयात्मकता, मुक्त प्रवाह, और अनुभूति-प्रधान वर्णन प्रमुख हैं।

उनकी शैली के कुछ लक्षण:

- अल्पशब्दों में अर्थ-भार
- आंतरिक संवाद और अंतरमन की अभिव्यक्ति
- प्रतीक एवं रूपक का मुक्त प्रयोग

ये विशेषताएँ उनकी रचनाओं को भाषिक अर्थों की परतों से भर देती हैं।

विषय-वस्तु और संवेदना

गीतांजलि श्री की रचनाएँ स्त्री-अनुभव, प्रेम, अस्तित्व, यादें, अवसाद, आकांक्षा जैसे विषयों पर केंद्रित हैं। उनके काव्य और लघुकथाओं में व्यक्तिगत तथा सार्वत्रिक संवेदनाओं का समन्वय होता है।

नीलाक्षी सिंह का साहित्यिक शिल्प, भाषा और शैली

शिल्प की विशिष्टताएँ

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में नीलाक्षी सिंह का रचनात्मक शिल्प सामाजिक यथार्थ, मानवीय संबंधों और आंतरिक संवेदनाओं के सजीव चित्रण पर आधारित है। उनकी रचनाएँ आधुनिक जीवन की जटिलताओं, सामाजिक संरचनाओं तथा व्यक्तिगत संघर्षों को प्रभावशाली कथा-रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनका शिल्प परंपरागत कथा-विन्यास को आधुनिक संवेदना के साथ संयोजित करता है। उनकी रचनात्मक संरचना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं [3]-

नीलाक्षी सिंह की रचनाओं का शिल्प मुख्यतः कथा-प्रवाह पर आधारित है। उनकी कहानियाँ और उपन्यास आरंभ–मध्य–अंत की स्पष्ट संरचना में आगे बढ़ते हैं। घटनाएँ क्रमबद्ध रूप से विकसित होती हैं, जिससे पाठक कथा-सूत्र से निरंतर जुड़ा रहता है। यह गुण उनके शिल्प को पाठक-संलग्न बनाता है।

उनकी रचनाओं में पात्र कथा के केंद्र में होते हैं। प्रत्येक पात्र की मानसिकता, सामाजिक स्थिति, आंतरिक द्वंद्व और व्यवहारिक संघर्ष का गहन चित्रण मिलता है। पात्रों का विकास कथा के साथ-साथ होता है, जिससे शिल्प में मानवीय यथार्थ की अनुभूति प्रबल होती है।

नीलाक्षी सिंह का शिल्प समाजोन्मुख यथार्थवाद पर आधारित है। वे अपनी रचनाओं में पारिवारिक संबंध, सामाजिक दबाव, स्त्री-स्थिति, वर्ग-संघर्ष और सांस्कृतिक विसंगतियों को वास्तविक जीवन के निकट प्रस्तुत करती हैं। इससे उनका शिल्प दस्तावेज़ीय प्रामाणिकता प्राप्त करता है।

उनकी रचनाओं में संवादों का विशेष महत्व है। संवाद न केवल कथा को आगे बढ़ाते हैं, बल्कि पात्रों की मानसिकता और सामाजिक स्थिति को भी स्पष्ट करते हैं। संवादों की स्वाभाविकता उनके शिल्प को नाटकीय प्रभाव प्रदान करती है।

नीलाक्षी सिंह अपनी रचनाओं में स्थान और वातावरण का सूक्ष्म विवरण प्रस्तुत करती हैं। ग्रामीण, कस्बाई या नगरीय परिवेश की वास्तविकता भाषा और वर्णन के माध्यम से जीवंत हो उठती है। यह गुण उनके शिल्प को सांस्कृतिक यथार्थ से जोड़ता है।

उनके शिल्प में स्त्री पात्र केवल कथा का विषय नहीं, बल्कि कथ्य की प्रेरक शक्ति होती हैं। स्त्री के संघर्ष, आत्मसम्मान, पारिवारिक दायित्व और सामाजिक सीमाओं को कथात्मक ढाँचे में गहराई से पिरोया गया है।

नीलाक्षी सिंह का वाक्य-विन्यास सहज, प्रवाहपूर्ण और संवादात्मक है। भाषा कथ्य के अनुरूप ढलती है और पाठक के लिए सहज ग्राह्य बनती है। यह भाषा-शिल्प रचना को सामान्य पाठक तक पहुँचने योग्य बनाता है।

भाषा का प्रयोग

नीलाक्षी सिंह की भाषा सजीव, स्पष्ट, संवाद प्रधान और यथार्थपरक होती है। उनकी भाषा न केवल भाव को संप्रेषित करती है, बल्कि स्थानीयता, संस्कृति और सामाजिक शब्दावली को भी सहजता से समाहित करती है। उदाहरण के रूप में ग्रामीण या नगरीय संवाद, सामाजिक नाम, लहज़ा और परंपरागत शब्द उनके पात्रों को अधिक वास्तविकता प्रदान करते हैं।

शैलीगत विशिष्टताएँ

नीलाक्षी सिंह की शैली वर्णनात्मकता, पात्र-केंद्रित दृष्टिकोण, घटनाक्रम की सजीवता, और संवाद की बहुरूपीता से संपन्न है। [4]

कुछ प्रमुख शैलीगत विशेषताएँ:

- चरित्र की अंतः दृष्टि
- समय-स्थान की स्पष्ट अभिव्यक्ति
- घटनाओं का क्रमिक विकास
- आधुनिक यथार्थवाद का समावेश

विषय-वस्तु और संवेदना

नीलाक्षी सिंह की रचनाओं में समाज, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, परिवार, मानवीय संघर्ष, और सामाजिक न्याय जैसे विषय प्रमुख हैं। उनके पात्रों की संवेदना मानव मनोविज्ञान, सामाजिक दबाव, सांस्कृतिक विविधता और स्त्री-स्थिति के परिप्रेक्ष्य में विकसित होती है।

तुलनात्मक विश्लेषण

नीचे तीन मुख्य आयामों पर तुलनात्मक सार प्रस्तुत किया गया है:

शिल्प (Craft)

आयाम	गीतांजलि श्री	नीलाक्षी सिंह
रचना का आधार	प्रत्यक्ष अनुभूति एवं प्रतीकात्मकता	घटना, चरित्र और यथार्थवाद
संरचना	मुक्त, भावनात्मक, अल्प शब्दों में अर्थ	संवादप्रधान, संरचित, विस्तारवादी
अंत	खुला, अर्थ के लिए पाठक को स्थान	अपेक्षाकृत पूर्ण, पाठक-संतुष्टि केंद्रित

भाषा का प्रयोग

आयाम	गीतांजलि श्री	नीलाक्षी सिंह
भाषा की प्रकार	लयात्मक, प्रतीकात्मक	सजीव, स्पष्ट, संवादात्मक
शब्द चयन	अलंकार, चित्रात्मकता	स्थानीयता, सामाजिक शब्दावली
भावार्थ	संकेतात्मक अर्थ	यथार्थ अभिव्यक्ति

शैली

आयाम	गीतांजलि श्री	नीलाक्षी सिंह
शैली	काव्यात्मक, मुक्त प्रवाह	वर्णनात्मक, यथार्थवादी
पात्र	सार्वत्रिक प्रतीक	सामाजिक चरित्र
थीम	मनोवैज्ञानिक, अस्तित्व	सामाजिक, पारिवारिक, संघर्ष

प्रमुख विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

- **भाषिक विविधता:** गीतांजलि श्री तथा नीलाक्षी सिंह दोनों की भाषा समकालीन हिंदी साहित्य में भिन्न परंतु समृद्ध है — एक लय एवं प्रतीक पर आधारित, दूसरी संवाद एवं यथार्थ पर आधारित।
- **शिल्प में अंतर:** गीतांजलि श्री का शिल्प मनोवैज्ञानिक और अनुभूति-प्रधान है, जबकि नीलाक्षी सिंह की रचनाएँ सामाजिक और यथार्थवादी घटनाओं पर टिकी हैं।
- **शैलीगत विशिष्टता:** दोनों की शैली में अलग-अलग पहचान है — गीतांजलि श्री का मुक्त प्रवाह, नीलाक्षी सिंह का वर्णनात्मक शब्द चित्र।
- **विषय:** दोनों लेखिकाएँ स्त्री-अनुभव, सामाजिक विसंगतियाँ और मानवीय संवेदना को प्राथमिक विषय बनाती हैं, किन्तु उनके दृष्टिकोण और प्रस्तुति शैली भिन्न है।

समकालीन हिंदी साहित्य में योगदान

गीतांजलि श्री तथा नीलाक्षी सिंह दोनों का योगदान समकालीन हिंदी साहित्य के संवेदनशील, विविध और सशक्त महिला-लेखन के प्रवाह को मजबूत करने में रहा है।

- **गीतांजलि श्री**: भाषा के प्रतीकात्मक प्रयोग, मनोवैज्ञानिक गहराई और अल्पशब्दीय रचना की कला को प्रोत्साहित करती हैं।
- **नीलाक्षी सिंह**: सामाजिक यथार्थ, संवाद और चरित्र-निर्माण के माध्यम से हिंदी उपन्यास एवं लघुकथा-धारा को संवेदनशील दिशा प्रदान करती हैं।

इन दोनों लेखिकाओं की रचनाएँ पाठकों को केवल भावनात्मक संतुलन नहीं देती, बल्कि सोच, विवेचना, और संवेदना के माध्यम से जीवन की जटिलताओं को समझने का अवसर प्रदान करती हैं।

निष्कर्ष

यह तुलनात्मक अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि गीतांजलि श्री और नीलाक्षी सिंह की रचनाएँ आधुनिक हिंदी साहित्य में भाषा, शिल्प और शैली के विविध रूपों का प्रतिनिधित्व करती हैं। जहाँ गीतांजलि श्री की काव्यात्मक लघुकथाएँ प्रतीकात्मकता और अनुभूति को प्राथमिकता देती हैं, वहीं नीलाक्षी सिंह की रचनाएँ सामाजिक यथार्थ और जीवंत पात्रों के माध्यम से अपने विचारों को सुदृढ़ करती हैं। इन दोनों लेखिकाओं का अध्ययन आधुनिक साहित्य की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये दोनों लेखिकाएँ स्त्री-अनुभव, समाज, संस्कृति तथा मानवीय संवेदना पर अपनी विशिष्ट शैली में विचार प्रस्तुत करती हैं।

संदर्भ

1.गीतांजलि श्री. हमारा शहर उस बरस. राजकमल प्रकाशन, 2016
2.गीतांजलि श्री. रेत समाधि. राजकमल प्रकाशन, 2018
3.नीलाक्षी सिंह. शुद्धिपत्र. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2008
4.नीलाक्षी सिंह. खेला. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2021
5.मन्नू भंडारी. आपका बंटी. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 1971